पटाखे तो पूरे देशमें चले, फिर दिल्लीका ही दम क्यों घुट रहा

दिल्ली की हवा में प्रदूषण खतरनाक स्तरपर पहुंच गया है। दीपावली के तीसरे दिन मंगलवार को कुछ इलाकोंमें इससे आंशिक राहत तो मिली। हालांकि कई इलाके ऐसे भी रहे जहां प्रदूषण का स्तर तकरीबन ४०० रहा। इससे एक दिन पहले हालात बेहद खराब थे। कई जगहों पर तो धुंधकी वजहसे दृश्यता शून्य तक हो गई थी।



दीपावली पर हर साल दिल्ली गैस चैंबर बन जाती है, जबकि प्रदूषण की रोकथाम के लिए तैयारियां इससे पहले ही शुरू कर दी जाती हैं। इसके बावजूद दीपावली और उसके आसपास दिल्ली की हवा सांस लेने लायक नहीं रह जाती। ज्यादातर लोग इसका दोष पटाखों को देते हैं। मगर सबसे बड़ा सवाल यही है कि पटाखे तो पूरे देश में चलते हैं, फिर आखिर दिल्ली का दम ही क्यों घुटता है? इसके पीछे असल में सिर्फ प्रदूषण ही कारण नहीं है। दिल्ली की भौगोलिक स्थिति, मौसम, हवा सब मिलकर देश की राजधानी को बदनामी के शिखर पर पहुंचाते हैं। दूसरों शहरों में क्यों नहीं रुकता प्रदूषण पटाखे भारत के हर शहर में चलते हैं, हवा में प्रदूषण भी खूब होता है, ऐसे में सवाल ये है कि आखिर दूसरे शहरों में पॉल्यूशन क्यों नहीं रुकता। सीएमक्यूएम की रिपोर्ट के मुताबिक दिल्ली में सिर्फ दिल्ली का पॉल्यूशन नहीं है. यहां आसपास के प्रदेशों से भी धुआं आकर इकट्ठा हो रहा है। इसीलिए दिल्ली में हवा की गुणवत्ता ज्यादा खराब दिखती है.असल में हवा में पॉल्यूशन लखनऊ, कानपुर, पटना या जयपुर जैसे शहरों में भी होता है, मगर दिल्ली जितनी मात्रा में नहीं. इसीलिए उन पर ध्यान नहीं जाता। दूसरा हर शहर में हवा की गति, तापमान, नमी अलग होती है। चूंक दिल्ली हिमालय की तलहटी में है, इसीलिए यहां ठंड का असर पहले और ज्यादा होता है। अगर हवा हो तो ये असर कम हो सकता है। 2024 में ऐसा हुआ था जब दिवाली की रात एक्यूआई 600 के आसपास पहुंच गया था, मगर हवा तेज चलने की वजह से अगले दिन यह महज 97 था. जो दिल्ली के नजरिए से सामान्य था। खुद सेंटर ऑफ साइंस एंड इनवायरमेंट ने इस पर रिसर्च की थी। दिल्ली एनसीआर में धुआं और प्रदूषण के अलग-अलग कारक होते हैं। गर्मियों में हवा तेज चलती है, जो इन प्रदूषक तत्वों को उड़ाकर इधर उधर ले जाती हैं, मगर सर्दी में तापमान में गिरावट की वजह से धुआं व अन्य प्रदूषक तत्व जमीन के आसपास जमा होने लगते हैं। हवा के न चलने की वजह से ये हानिकारक गैसें हवा में बनी रहती हैं और एयर क्वालिटी को बिगाड़ती हैं. अगर हवा तेज चले तो ये प्रदूषक तत्व हवा के साथ दिल्ली से बाहर जा सकते हैं। मौसम विज्ञान में इसें वेंटिलेशन कहते हैं. जो हो नहीं पाता. दिल्ली में प्रदूषण की वजह से हुए इस रिसर्च के मुताबिक सर्दी में मौसम में तापमान इन्वर्जन बहुत तेजी से होता है. दरअसल हवा अगर हवा गर्म होती है तो ऊपर की ओर उठती है और ठंडी से 1500 मीटर ऊपर तक हवा की हलचल अच्छी होती है। वहां से ठंडी हवा नीचे की ओर आती है और गर्म हवा ऊपर की ओर जाती है. सर्दी में यह हाइट 300 मीटर ही रह जाती है। ऐसे में अगर हवा प्रदूषक तत्वों को लेकर ऊपर उठती भी है तो ज्यादा ऊंचाई न होने की वजह से आसपास ही बनी रहती है. दिल्ली में आसपास के राज्यों में जलने वाली पराली भी प्रदूषण का मुख्य कारण है. खासकर अक्टूबर और नवंबर के दौरान पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में धान की कटाई के बाद पराली जलाने की घटनाएं होती हैं. इससे भारी मात्रा में धुआं और प्रदूषक निकलते हैं. इनमें पीएम 2.5 और पीएम 10 जैसे बारीक कण भी शामिल होते हैं. उत्तर-पश्चिमी दिशा में चल रही हवा की वजह से ये दिल्ली-एनसीआर तक पहुंच जाते हैं और यहां से बाहर नहीं निकल पाते. सर्दी में नमी और कोहरा भी मुसीबत बढ़ाते हैं. इस दौरान हवा में नमी बढ़ने पर कुछ प्रदूषक कण पानी को अपने ऊपर जमा कर लेते हैं. खासकर पीएम 2.5 जैसे बारीक कण नमी के संपर्क में आकर बड़े हो सकते हैं. कुछ परिस्थितियों में हवा में मौजूद गैसों से नए कण भी बनते हैं. इससे प्रदूषण की मात्रा और दृश्यता दोनों प्रभावित हो सकती हैं। इसी वजह से सर्दियों में कई बार दिल्ली की सड़कों पर धुंध जैसी सफेद या भूरी परत दिखाई देती है। दिवाली की रात चलने वाले पटाखे प्रदूषण का एक अतिरिक्त सोर्स बनते हैं। दरअसल दिल्ली की हवा में पहले से ही प्रदूषक तत्व जमा होते हैं। पटाखों का धुआं और हानिकारक गैसें भी उसमें शामिल हो जाती हैं और दिल्ली को गैस चैंबर बना देती हैं। सीएक्यूएम की फरवरी 2026 में जारी विशेषज्ञ रिपोर्ट के अनुसार, सर्दियों में दिल्ली के पीएम 2.5 प्रदूषण में 27 प्रतिशत योगदान सेकेंडरी पार्टिकल्स, 23 प्रतिशत परिवहन, 20 प्रतिशत बायोमास बर्निंग, 15 प्रतिशत धूल और 9 प्रतिशत उद्योग के थर्मल पावर प्लांट का योगदान है।



हवा नीचे की ओर आती है. हालांकि सर्दियों में हालात इसेस उलट हो जाते हैं, क्योंकि जमीन के संपर्क में रहने वाली हवा ठंडी हो जाती है. इससे ऊपर जो हवा होती है वो गर्म होती है, जो एक परत बना लेती है. यानी ठंडी हवा, जिसमें प्रदूषक तत्व जमा हैं उन्हें बाहर निकलने का मौका ही नहीं मिलता. काउंसिल ऑन एनर्जी, एनवायरमेंट एंड वॉटर सीव की एक रिसर्च के मुताबिक एक और वजह है मिक्सिंग हाइट का कम होना. दरअसल गर्मियों में जमीन



कांच की दीवारें तोड़कर बनाएं पहचान-प्रियंका चोपड़ा

प्रियंका चोपड़ा आज किसी पहचान की मोहताज नहीं. बरेली के एक छोटे से शहर से निकलकर बॉलीवुड और फिर हॉलीवुड तक का सफर तय करने वाली देसी गर्ल प्रियंका ने अपनी शर्तों पर जिंदगी जी है और उन्होंने हमेशा यह साबित किया है कि अगर आपके सपनों में उड़ान और खुद पर भरोसा हो, तो दुनिया की कोई भी ताकत आपको आगे बढ़ने से नहीं रोक सकती. वे दुनिया भर की महिलाओं के लिए एक प्रेरणा हैं. अगर आप भी अपनी जिंदगी में कुछ बड़ा करना चाहती हैं, खुद को मजबूत बनाना चाहती हैं या अपने आत्मविश्वास को बढ़ाना चाहती हैं, तो प्रियंका चोपड़ा के ये 10 अनमोल विचार आपके दिल को छू लेंगे और आपको बड़ा सोचने के लिए प्रेरित करेंगे-कांच की सैंडल में फिट होने की कोशिश मत कीजिए, बल्कि कांच की उस छत को ही तोड़ डालिए जो आपको रोकती है. प्रियंका का मानना है कि महिलाओं को दूसरों के बनाए तय दायरे में खुद को ढालने की जरूरत नहीं है. अपनी सीमाओं को तोड़कर अपनी अलग पहचान बनाना ही असली कामयाबी है.महत्वाकांक्षा एक ऐसा शब्द है जिसे महिलाओं से नकारात्मक रूप से जोड़ा जाता है. लोग कहते हैं कि वह बहुत एम्बिशियस है, लेकिन इसमें बुरा क्या है? आगे बढ़ने की चाहत रखना और बड़े सपने देखना हर किसी का हक है. महिलाओं को अपनी महत्वाकांक्षाओं पर गर्व होना चाहिए, न कि झिझक.जिंदगी में आप चाहे जहां भी जाएं या जिससे भी शादी करें, आपका आर्थिक रूप से स्वतंत्र होना सबसे जरूरी है, चाहे आप उस पैसे का इस्तेमाल करें या न करें. प्रियंका महिलाओं को हर हाल में फाइनेंशियली इंडिपेंडेंट बनने की सलाह देती हैं, क्योंकि आर्थिक आजादी ही आपको असल मायने में सशक्त बनाती है.जो एक चीज मैं सबसे बेहतर तरीके से पहनती हूँ, वह है मेरा आत्मविश्वास. यही मैं हर किसी को पहनने की सलाह दूंगी. आपका लुक कैसा भी हो, आपका कॉन्फिडेंस ही आपको भीड़ में सबसे अलग और खास बनाता है.आपको नहीं पता कि जिंदगी आपके सामने कौन से मोड़ ले आएगी. आपके अंदर खुद की और अपने अपनों की देखभाल करने की क्षमता होनी चाहिए. जिंदगी अनिश्चितताओं से भरी है, इसलिए हर महिला में खुद के पैरों पर खड़े रहने और हर स्थिति से निपटने की ताकत होनी चाहिए.अकेले सफर तय करने से मत डरिए, जब आप अपनी सफलता और असफलता की जिम्मेदारी खुद लेती हैं, तो आप और भी मजबूत बनती हैं।



गधा मेला- सबसे महंगा ७२ हजार का बिका अमिताभ

धर्म नगरी चित्रकूट का ऐतिहासिक गधा मेला देशभर में चर्चित है। यह मेला दीपावली के दूसरे दिन से मां मंदाकिनी नदी के तट पर शुरू हो जाता है। जहां मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश सहित कई जिलों के खरीदार और गधे बेचने वाले आते हैं. अगर इस बार के गधे मेले की बात की जाए तो इस बार गधे मेले में क्रय-विक्रय हर साल की अपेक्षा काफी कम हुआ है. यह मेला आज (10 नवंबर) दूसरे दिन ही समाप्त होने की कगार पर है। व्यापारी अपने जानवरों के साथ लौटते दिख रहे हैं।



यहां जमीन नहीं, पानीपर तैरते हैं घर और बाजार

भारत में एक ऐसी जगह भी है, जहां सुबह की शुरुआत सड़कों के शोर से नहीं, बल्कि झील के शांत पानी और शिकारे की सवारी से होती है। यहां घरों से लेकर बाजार तक पानी के बीच बसे नजर आते हैं। चारों तरफ पहाड़, पानी पर तैरते शिकारे और खूबसूरत हाउसबोट इस जगह को किसी दूसरी दुनिया जैसा एहसास कराते हैं। हम बात कर रहे हैं जम्मू-कश्मीर की मशहूर डल झील की। श्रीनगर आने वाले पर्यटकों के लिए यह झील सिर्फ घूमने की जगह नहीं, बल्कि कश्मीर की संस्कृति और जीवनशैली को करीब से समझने का मौका भी है। डल झील की सबसे खास बात यहां के हाउसबोट हैं। ये लकड़ी से बने खूबसूरत घरनुमा नावें होती हैं, जिनमें पर्यटक ठहर सकते हैं। इनके अंदर बेडरूम, ड्राइंग रूम, डाइनिंग एरिया और कई आधुनिक सुविधाएं मिलती हैं। इन हाउसबोट की दीवारों और छतों पर की गई कश्मीरी लकड़ी की नक्काशी देखने लायक होती है। यहां ठहरने का अनुभव किसी होटल से बिल्कुल अलग होता है। सुबह खिड़की खोलते ही सामने पानी और पहाड़ों का नजारा दिखाई देता है.डल झील का फ्लोटिंग वेजिटेबल मार्केट यानी तैरता हुआ सब्जी बाजार यहां का सबसे अनोखा आकर्षण है।



